ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 | सितम्बर - II - 2022 | अंक - 12 | माउण्ट आबू | Rs.-10

विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया गया दादी प्रकाशमणि का 15वां पुण्य स्मृति दिवस

- देश के हर प्रांत से पहुंची वरिष्ठ राजयोग शिक्षिकाओं ने की विशेष योग-तपस्या
- पाँच हज़ार से अधिक लोगों ने अर्पित किए श्रद्धासुमन
- ब्रह्ममुहूर्त से ही प्रकाश स्तंभ पर लगा रहा तांता

शांतिवन-आबू रोड। 25 अगस्त, संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के पंद्रहवें पुण्य स्मृति दिवस पर सवेरे 3 बजे से ही शांतिवन परिसर में दादी के स्मृति में बने प्रकाश स्तंभ पर दादी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए संस्थान के भाई-बहनों का तांता लगा रहा। किसी ने पुष्पों से, किसी ने प्रेमपूर्ण अश्रुपूरित नयनों से, तो किसी ने उनकी शिक्षाओं एवं स्नेह को अपने मानस पटल पर लाते हुए अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस मौके पर संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई, अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई, राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, अमेरिका से आईं डॉ. हंसा रावल व संस्थान के अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

इस अवसर पर दादी रतनमोहिनी ने कहा कि दादी के साथ हम सखी की तरह अंग-संग रहे। दादी को हमेशा रहता था कि सभी बाबा के बच्चे आगे बढ़ें और जल्दी-जल्दी बाबा की प्रत्यक्षता हो। इसके लिए दादी के अंदर बड़े-बड़े प्रोग्राम कर बाबा का संदेश घर-घर तक पहुंच जाये, ये उमंग सदा बना रहता था। दादी के सामने जो कोई आता था वो उमंग उत्साह से भर जाता था और सेवाओं में सहयोगी बन जाता था।

ब्र.कु. निर्वैर भाई ने दादी को याद करते हुए कहा कि जन-जन की सेवा के लिए दादी जी ने अपने जीवनकाल में समय प्रति समय नित नये उमंग से सेवाओं में सभी भाई-बहनों को हिम्मत दिलाई, आगे बढ़ाया, तो जो पहले छोटे-छोटे प्रोग्राम्स होते थे वो बड़े-बड़े कॉन्फ्रेन्स और सेमिनार में बदल गये। फिर सेवायें बढ़ती ही चली गईं, जिसका विशाल स्वरूप आज हम सभी देख रहे हैं।

ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि मुझे दादी प्रकाशमणि जी के साथ 40 साल रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं आज जो कुछ हूँ वो दादी जी की बदौलत हूँ। दादी ने मुझे सिखाया कि बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार, फेथफुल, सच्चाई और सफाई से रहना है। इन छः बातों को मैंने अपने जीवन का महामंत्र बनाया और इन धारणाओं को अपनाया। इनके कारण ही मैं यहां तक पहुंच पाई हूँ। ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि दादी जी का जीवन हमेशा ही दूसरों के लिए रहा। इसलिए वे हर किसी की दादी थीं। दादी की रूहानी दृष्टि जिसे मिलती, उस आत्मा को यह अनुभव होता था कि जैसे दादी की दृष्टि द्वारा परमात्मा हम बच्चों को लाइट और माइट दे रहे हों, असीम प्यार दे रहे हों। ब्र.कु. करुणा भाई ने कहा कि जब मैं पहली बार दादीजी के पास मुम्बई गया तो दादीजी ने स्वयं भोजन बनाकर मुझे खिलाया। तब मुझे आश्चर्य हुआ कि इतनी ज़िम्मेदारी संभालते हुए भी दादीजी के अंदर कोई अभिमान नहीं था। इस दिन पर विशेष दादी के निमित्त परमात्मा शिव को भोग स्वीकार कराकर ब्रह्माभोजन का आयोजन किया गया।

विशेष भाग एवं ब्रह्माभोजन

इस दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. शशि दीदी, ओआरसी गुरूग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, ब्र.कु. हंसा दीदी, ब्र.कु. नीलू दीदी सहित देशभर के हरेक प्रांत से पहुंचीं वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी बहनें मौजूद रहीं। सुबह 3 बजे ब्रह्ममुहूर्त से ही भाई-बहनों ने दादी की स्मृति में विशेष योग-तपस्या की।

दादी की स्मृति में मधुर वाणी ग्रुप ने बहुत ही मर्मस्पर्शी गीत की प्रस्तुति देकर सभी को भावविभोर कर दिया।

डायमण्ड हॉल के विशाल सभागार में मुम्बई घाटकोपर के भाई-बहनों द्वारा दादी की जीवनी पर दी गई लघु नाटिका की प्रस्तुति ने सभी के दिलों में दादी की स्मृतियों को तरोताज़ा कर दिया।

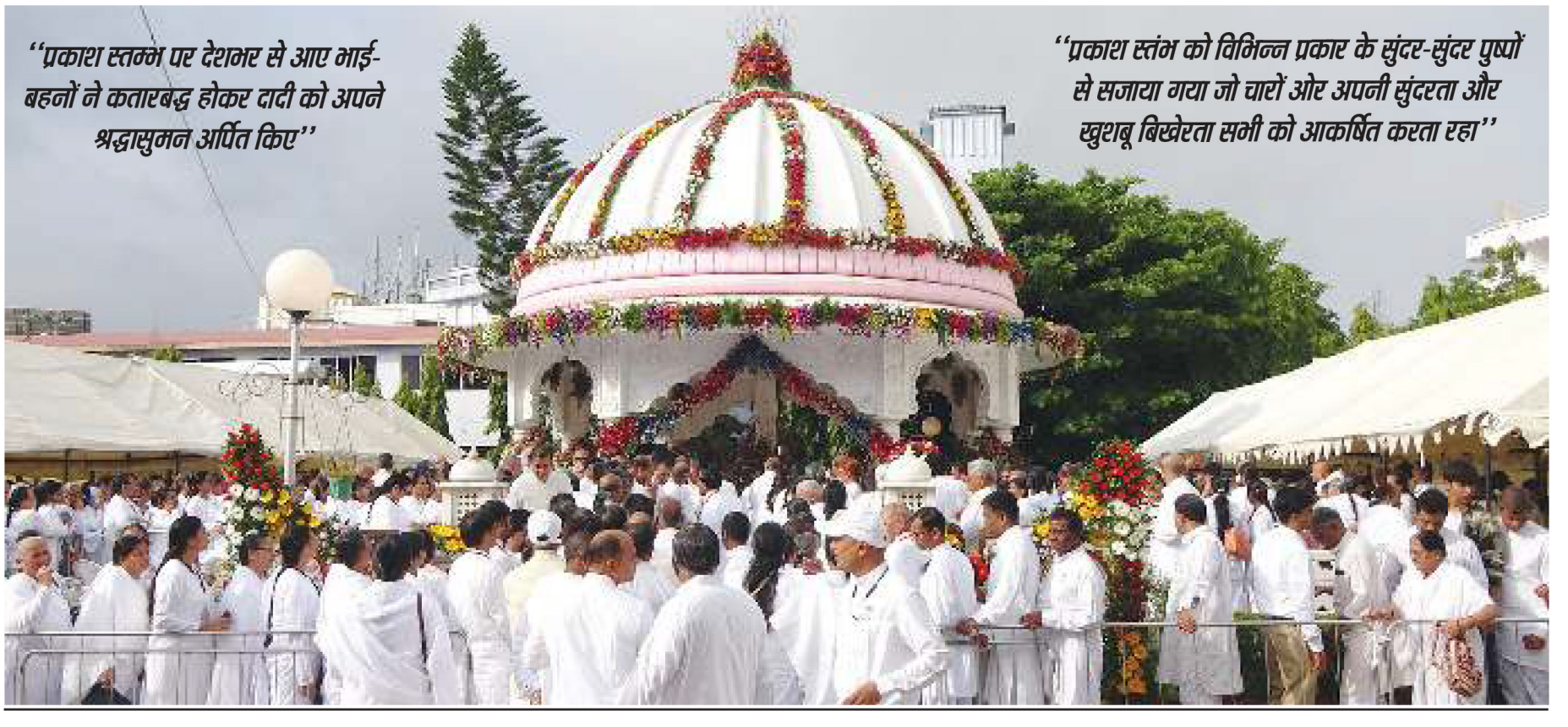

''प्रकाश स्तम्भ पर देशभर से आए भाई-बहनों ने कतारबद्ध होकर दादी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए''

''प्रकाश स्तंभ को विभिन्न प्रकार के सुंदर-सुंदर पुष्पों से सजाया गया जो चारों ओर अपनी सुंदरता और खुशबू बिखेरता सभी को आकर्षित करता रहा''